ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 28 कुल पृष्ठ-8 2 से 8 मई, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 वै. कृ.-13

आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

ग्रीष्म कालीन छुट्टियों में युवा निर्माण शिविरों का होगा व्यापक आयोजन

युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी की पुण्यतिथि के अवसर पर

12 जून, 2019 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में होगा भव्य युवा संकल्प समारोह

20 से 28 जून, 2019 तक कार्यकर्ता कैप्सूल शिविर प्रतिवर्ष की भांति किया जायेगा आयोजित

1 से 5 जून, 2019 तक आर्य युवक निर्माण शिविर तथा 6 से 12 जून, 2019 तक कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में आयोजित होंगे

अमेरिका से पधारे श्री चन्द्रभान आर्य जी का किया गया अभिनन्दन

इच्छुक युवा शीघ्र सम्पर्क करें

आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की महत्त्वपूर्ण बैठक 21 अप्रैल, 2019 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में परिषद् के प्रमुख पदाधिकारियों, व्यायाम शिक्षकों एवं कार्यकर्ताओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। बैठक की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने सर्वप्रथम सभी कार्यकर्ताओं तथा पदाधिकारियों का परिषद् के 'स्वर्ण जयन्ती समारोह' को सफल बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। स्वामी जी ने कहा कि 50 वर्ष पूर्व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की स्थापना आर्य समाज के तेजस्वी, तपस्वी एवं त्यागी संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने विशिष्ट सहयोगियों सर्वश्री स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, मा. धर्मपाल आर्य, प्रो. बलजीत सिंह आर्य, प्रो. उम्मेद सिंह, स्वामी शक्तिवेश जी आदि को साथ लेकर की थी और आर्य समाज में हजारों युवकों को दीक्षित करके एक नया इतिहास रचा था। परिषद् की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में गत 9 व 10 मार्च, 2019 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में स्वर्ण जयन्ती समारोह का विशाल आयोजन करके 50 वर्ष का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया। विदित हो कि परिषद् के माध्यम से गत 50 वर्षों में जहां लाखों युवक एवं युवतियों को आर्य समाज से जोड़ा गया वहीं बड़े–बड़े आन्दोलन जन–चेतना अभियान, विशाल सम्मेलन एवं शिविरों के माध्यम से ऐतिहासिक उपलब्धियाँ प्राप्त की गई।

हरियाणा बनने के साथ ही चण्डीगढ़ आन्दोलन, किसान आन्दोलन,

शेष पृष्ठ 4 पर

नौजवानों तैयार हो जाओ!

युवा साथियों यदि आप अपनी ग्रीष्मकालीन छुट्टियों का सदुपयोग करना चाहते हैं और आप आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए अपने संकल्प को मजबूत करना चाहते हैं तो अभी से उपरोक्त शिविरों में जहाँ आपको अनुकूल हो भाग लेने का मन बना लें तथा अपनी सूचना अग्रिम देकर अपना स्थान निश्चित करवा लें। युवक एवं युवतियों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है जिसका लाभ उठाकर वे अपने जीवन को सही दिशा प्रदान कर सकते हैं। आप यदि उपरोक्त शिविरों में भाग लेना चाहते हैं या अपने क्षेत्र में स्थानीय शिविर लगाने की इच्छा रखते हैं तो आप योगाचार्य श्री दीक्षेन्द्र एवं बहन प्रवेश आर्या तथा बहन पूनम आर्या से निम्न 9416630916, 9354840454, 9468165946 नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं।

बैठक बड़े उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई। सभी कार्यकर्ताओं को अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया। प्रीतिभोज के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

हृदय गुफा से प्रस्फुटित विचार

– आचार्य महावीर सिंह

25 फरवरी को प्रातः 6 बजे प्रतिदिनों की भान्ति मैं अपने परिवार व अपने ब्रह्मचारियों के साथ यज्ञ करने बैठा था। यज्ञमान पद पर मैं स्वयं ही बैठा था। यज्ञ करते–करते, अग्नि में आहुतियां समर्पित करते हुए विचारों के भ्रमर जाल में उलझ कर रह गया। एक से एक विचार मानसपटल पर उभरने लगे। एक ओर स्वाहा–स्वाहा की ध्वनियों से आहुतियां दिए जा रहे थे, दूसरी ओर विचार उत्पन्न हो रहे थे– अहो कितना सौभाग्य है हम सबका जब समाज का अधिकतम वर्ग बिस्तरों में घुसे प्रगाढ़निन्द्रा ले रहे होंगें, हम लोग उस समय इस यज्ञ के माध्यम से देवों, पितरों को उनका भाग समर्पित करने में लगे हैं। ब्राह्मेमुहूर्तेयानिन्द्रा सा पुण्यक्षयंकारिणी– ब्रह्म मुहूर्त की निन्द्रा सभी पुण्यों को, पुण्यमय अवसरों को नष्ट कर देती है। यह कहावत हमारे मनीषियों ने यूं ही नहीं बना दी है। उसमें हेतु है, कारण है, और वह कारण है ब्रह्म मुहूर्त की उपेक्षा, ब्रह्म मुहूर्त का निरादर। ब्रह्म मुहूर्त सौभाग्य को जगाने वाली बेला है। अभीष्ट कामनाओं को पूरा करने वाला समय है। अभीष्ट कामनाएं उन्हीं की पूरी होंगी जो ब्रह्म मुहूर्त का आदर करेंगें और प्रातःकाल जल्दी उठेंगें।

ब्रह्म– से अभिप्राय ज्ञान से है। ज्ञान को प्राप्त करने का समय, ज्ञानी ब्रह्मवेत्ताओं का वह समय होता है।

चूंकि–मुक्ति को प्राप्त ज्ञानी ब्रह्मवेत्ताओं की आत्माएं उस काल में आकाश मार्ग पर विचरण करती रहती हैं। उन्हीं दिव्यात्माओं, दिव्यजनों, मुक्तात्माओं का विहार का वह काल होता है, वह बेला होती है, इसलिए उस काल को, उस मुहूर्त को ब्रह्म मुहूर्त की संज्ञा दी गयी है। उस समय उस मुहूर्त में आलस्य व प्रमाद का त्याग कर जो भी व्यक्ति जिस–जिस कामना को लेकर उठ खड़ा हो जाता है। आकाश मार्ग में विचरण करने वाली वे दिव्यात्माएं उनकी उन अभिलाषाओं को पूरी कर देती है, उसकी वह कामना पूरी हो जाती है।

ब्रह्मा का काम– निर्माण करना भी होता है। ब्रह्म बेला में उठने वालों का सौभाग्य जगता है। उनके भाग्य का निर्माण होता है। इसलिए भी उस काल को ब्रह्म बेला कहते हैं। मनु जी महाराज कहते हैं–

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्यते धर्माथौचानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्वार्थमेव च।।

कल्याण की कामना वाले मनुष्य को चाहिए कि वह ब्रह्म मुहूर्त में उठे। धर्म व अर्थ का चिन्तन करे। उनके विषय में सोचे। किस प्रकार धर्म का पालन किया जाए अर्थात् अपने कर्तव्य कर्मों का पालन किया जाना है, करना है और धर्मपूर्वक अर्थ का उपार्जन किया जाए। कर्त्तव्य का पालन करते हुए अर्थ कमाया जाए अथवा कर्त्तव्यों की अनुपालना हेतु धन उपार्जित किया जाए। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इस पुरुषार्थ चतुष्टय में अर्थ से पूर्व धर्म को स्थान दिया गया है। धर्मपूर्वक कमाया गया अर्थ मनुष्य की कामनाओं की जब पूर्ति करता है तब जाकर मनुष्य मुक्ति को प्राप्त होता है। धर्म से मैंनें यहां पर कर्त्तव्य कर्म लिया। मनुष्य

का संसार में अवतरण ही अपने शिष्ट, अवशिष्ठ, विशिष्ठ कर्तव्य कर्मों को पूरा करने के लिए ही होता है। मैं अपने जन्म– जन्मान्तरों से लम्बित कर्तव्य कर्मों को पूरा करूंगा। इसी कामना को लेकर वह संसार में आता है। तब तक आता रहता है जब तक उसकी वह कामना पूरी नहीं हो जाती। जब वह कामना पूरी हो जाती है तो वह मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। उसकी जन्म–जन्मान्तरों से चले आ रहे जन्म–मरण के सिलसिले से, जन्म–मरण के महापातक दुःख से उसकी मुक्ति हो जाती है। उससे वह छूट जाता है। उस अवस्था को प्राप्त हो जाता है जिसको मोक्ष कहते हैं, जिसे अपवर्ग कहते हैं। जिसे दर्शनकार के शब्दों में अत्यन्त दुःख निवृति र्मोक्षः कहा गया है। संसार में लिखना, पढ़ना, नौकरी करना, व्यापार करना आदि–आदि जो भी कार्य हैं, जिन्हें करने का बीड़ा मनुष्य उठाता है, जिन्हें करने के लिए मनुष्य तत्पर होता है, वे सब साधन हैं जिनके द्वारा मनुश्य अपने आपको सशक्त करता है। योग्य बनाता है, सामर्थ्यशाली बनाता है, अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए। जिसके फलस्वरूप वह अपने आपको कर्तव्य कर्मों के बंधन से मुक्त कर पाता है। यद्यपि पढ़ाई, व्यापार आदि कर्म करना भी कर्तव्य की श्रेणी में आते हैं। यह सभी कर्तव्य भी आवश्यक हैं उस महद कर्तव्य को निभाने के लिए जिसके लिए मनुष्य संसार में आता है जिसे निभाए बिना मनुष्य की मुक्ति संभव नहीं है। साधनों का संग्रह करना भी कर्तव्य है, धर्म है क्योंकि साधनों के बिना साध्य की प्राप्ति असंभव है। अतः साधनों के लिए प्रयास करना धर्म है। उस धर्म की पालना करते हुए यानि साधनों के लिए श्रम करते हुए, प्रयास करते हुए उनसे जो धन की प्राप्ति होगी वह धन मनुष्य की उन कामनाओं को पूरी कर देता है जिनकी पूर्ति के लिए मनुष्य संसार में आता है। वे कामनाएं हैं देश, जाति, समाज के प्रति माता, पिता, भाई, बहन नाते रिश्तेदारों के प्रति जो मनुष्य के कर्तव्य बनते हैं उन्हें पूरा करना। इन सब के रूप में मनुश्य को अपना एक संसार जो मिलता है वह सब इसी के लिए मिलता है, क्योंकि उन–उन के प्रति उसके कर्तव्य कर्म शेष थे या हैं, उन्हें उसे पूरा करना ही है। लेकिन योग मार्ग पर चलते हुए योगी जिस प्रकार नानाविध सिद्धियों के चक्रव्यूह में फंस कर योग भ्रश्ट हो जाता है। वैसे ही साधनों के संग्रह में लगी मनुष्य की इन्द्रियां साधनों के मार्ग में आने वाले रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि अपने विषयों में इतनी डूब जाती हैं कि अपने साध्य रूप कर्तव्यों से कोसों दूर रहकर उन्हीं में उलझ कर रह जाता है। इसलिए मनुष्य को ब्रह्म मुर्हूत में उठना आवश्यक है। इतना ही नही मनु जी महाराज कहते हैं–

उत्थायावश्यकं कृत्वा कृत शौच समाहितः।
पूर्वांसंध्याम् जपंस्तिश्ठेत् स्वकालं चापरांचिरम्।।

ब्रह्म बेला में उठकर शौच, स्नानादि से निवृत होकर देर तक जप करता रहे और अपर संध्या यानि सांय काल की संध्या बेला में भी देर तक जप करता रहे। जिसका फल यह होता है कि मनुष्य विषयों में उलझकर अपने कर्तव्य पथ से विमुख नहीं होता। ईश्वर की उसे सत्प्रेरणा व मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है, जिसके कारण वह निर्वाध रूप से अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते हुए अपनी मंजिल मोक्ष तक पहुंच जाता है। परमतत्व को प्राप्त कर लेता है। कैसे जैसे–

ऋशयोदीर्घ संध्यत्वात् दीर्घमायुः अवाप्नुयुः।
प्रज्ञां यशष्च कीर्ति च ब्रह्मवर्चसमेव च।।

ऋषि मुनियों ने दीर्घकाल तक जप करते हुए दीर्घ आयु को प्राप्त किया। विलक्षण, प्रज्ञा (बुद्धि) को प्राप्त किया, यश को प्राप्त किया, कीर्ति को प्राप्त किया। सबसे बड़ी बात ब्रह्म वर्चस्व को प्राप्त किया। तेज को प्राप्त किया। ब्रह्म बेला में उठने के इन सब महान लाभों के विषय में सोचते–2 पुनः अपने जीवन की और लौट आया सोचने लगा, न जाने जन्म–जन्मान्तरों के कौन से शुभ कर्म होंगे हमारे जिनके फलस्वरूप विभत्स माहौल में जिसमें जीव–जन्तुओं की हिंसा को क्रीड़ा के रूप में देखा जाता था। पशु पक्षियों का आखेट मनोरंजन के लिए किया जाता था। अपनी क्षणिक क्षुद्धा को शान्त करने के लिए किया जाता था। देवी–देवताओं का पूजन, पितरों का तर्पण भी निरीह जानवरों के जीवन के साथ खेल कर किया जाता था। इन सबको करते हुए लेशमात्र भी दया, पीड़ा का भाव मन में नहीं आता था। विपरीत हर्ष और उल्लास के रूप में इन सबको करते रहे, देखते रहे। आज जब उन क्षणों, उन पलों के विषय में सोचता हूं तो घृणा उपजती है। अपने उस बीते समय से पीड़ा होती है, व्यथा होती है। पशुओं के साथ किए जा रहे उस व्यवहार से सराहना करता हूं अपने सौभाग्य का जो मुझे उस दूषित वातावरण से अनायास ही दूर बहुत दूर ले आया। पूज्य स्वामी जी का संसर्ग मिला। शास्त्रों का अध्ययन किया। दोनों ने ही मिलकर इस संस्थान को खड़ा किया जिसके माध्यम से पूज्य स्वामी जी के साथ हमने बहुत बड़े–बड़े लोक कल्याण व जन कल्याण के कार्य किए। बड़े–बड़े दीर्घसत्रीय यज्ञ किए और कर रहे हैं। सर्दी हो, गर्मी हो, बरसात हो नित्य ही वेद की विभिन्न ऋचाओं से यज्ञाग्नि में रोजाना तर्पण कर रहे हैं। प्राणीमात्र की कल्याण की कामना से यज्ञ में सवा घंटे तक निरन्तर आहुतियां समर्पित कर रहे हैं। सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा काश्चिद दुःखभाग भवेत् की मंगलकामनाएं प्रेषित कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित अनुपम साहित्य
विशेष छूट पर उपलब्ध

33 पुस्तकों का 620/– रुपये का सैट
मात्र 370/– रुपये में प्राप्त करें

1.	यजुर्वेद	250.00	17.	वेद का इस्लाम पर प्रभाव	3.00
2.	बन्दा वीर बैरागी	18.00	18.	वैदिक धर्म की रूपरेखा	22.00
3.	आस्तिक नास्तिक संवाद	7.00	19.	वैदिक कोष संग्रह	15.00
4.	वेद संदेश	10.00	20.	विवेकानन्द विचार धारा	8.00
5.	आत्मा का स्वरूप	8.00	21.	विषलता इस्लाम की फोटो	8.00
6.	आचार्य शुक्रराज शास्त्री	5.00	22.	वैदिक सिद्धान्त	20.00
7.	आर्य ध्वज	3.00	23.	धर्मान्तरण	10.00
8.	आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या	20.00	24.	नारायण स्वामी जीवनी	8.00
9.	गो–हत्या या राष्ट्र हत्या	15.00	25.	काशी शास्त्र	3.50
10.	दयानन्द वचनामृत	5.00	26.	आदर्श त्रैतवाद	35.00
11.	इक्कीसवीं सदी का भारत	4.00	27.	ब्रह्म उपासना	8.00
12.	मुगल साम्राज्य का क्षय भाग–1, 2	20.00	28.	वेद निबन्ध स्मारिका	30.00
13.	मुगल साम्राज्य का क्षय भाग–3, 4	15.00	29.	आर्य समाज के संगठनात्मक सूत्र	20.00
14.	वेदांग प्रकाश	20.00	30.	श्रद्धांजलि	12.00
15.	वैदिक सूक्ति सुधा	5.00	31.	शिखों का तुष्टिकरण	2.00
16.	वेद और आर्य शास्त्रों में नारी	4.00	32.	एक ही मार्ग	3.00
			33.	मतान्तरण के अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र	4.00

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित उपरोक्त 33 पुस्तकों का 620 रुपये का सैट महर्षि निर्वाण दिवस (दीपावली) पर 40 प्रतिशत की विशेष छूट पर मात्र 370 रुपये में दिया जा रहा है। डाक से भेजने पर डाक व्यय 130 रुपये अलग से देने होंगे, इस तरह से डाक से मंगाने वाले महानुभावों को कुल 500 रुपये भेजने होंगे। यह राशि ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से डी.डी. या मनीआर्डर द्वारा भेज सकते हैं और यदि स्वयं आकर ले जाते हैं तो उन्हें डाक व्यय नहीं देना होगा।

प्राप्ति स्थान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'', 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985

आमन्त्रण पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के जन्मदिन का

प्रिय बन्धुओं दयानन्द मठ चम्बा के संस्थापक पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सुयोग्य शिष्य, निर्जन मठ की भूमि पर एक भव्य संस्थान बनाने वाले दयानन्द मठ के विस्तारक पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का 81वॉ जन्मदिन 3–4–5 मई को भव्यरूप से समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस समारोह में आप सभी लोग सादर आमन्त्रित हैं।

उस समारोह की शोभा– मठ के संरक्षक पूज्य स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली। मठ के संरक्षक, पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के एक मात्र सन्यस्त शिष्य, त्यागी, तपस्वी, सिद्धान्त शिरोमणि, ओजस्वी वक्ता पूज्य स्वामी सवितानन्द जी महाराज झारखण्ड वाले, विद्द्व शिरोमणि, शास्त्रों के मर्मज्ञ, प्रखर वक्ता गुरूवर श्री आचार्य

रामानन्द जी शिमला वाले, श्री पं0 संदीप आर्य जी भजनोपदेशक पानीपत वाले, श्री सतीश सुमन जी भजनोपदेशक मण्डली तथा अन्य सन्यासी, महात्मा, विद्वद वर्ग, मनीषिजन बढाऐंगें। आप लोगों के आने पर तो समारोह में चॉद सितारों का

समागम नजर आएगा। आशा है शीतलता की वयार बहाने आप लोग अवश्य आओगे। आकर हमारी पीठ थपथपाकर हमारा उत्साहवर्धन करोगे। यह देखकर कि उस महानायक के महाप्रयाण के बाद भी हम कैसे अडिग खड़े हैं, लड़खड़ाए नहीं। संस्था के कार्यों को अपने सामर्थ्य के अनुसार प्राणार्पण से आगे बढ़ाने में लगे हैं।

कार्यक्रम

दिनांक 3 मई, 2019

यज्ञ	:	प्रातः 7 बजे से 8:30 तक
यज्ञ के ब्रह्मा	:	**स्वामी सवितानन्द जी महाराज**
ध्वजारोहण	:	8:30 से 9:00 तक
	:	श्रीमान सुरेन्द्र भारद्वाज जी द्वारा
मुख्य अतिथि	:	**श्रीमान पवन नैय्यर जी**
		विधायक सदर, चम्बा
विशेष अतिथि	:	**श्रीमती नीलम नैय्यर जी**
		अध्यक्ष नगर परिषद्, चम्बा
उपदेश	:	9:30 से 10 बजे तक
पुनः सत्संग	:	11 बजे से 1 बजे तक भजन, उपदेश
भोजन	:	1 से 2 बजे तक
विश्राम	:	2 से 3:30 तक
चाय	:	3:30 से 4 बजे तक
सांयकालीन सत्र	:	4 से 5:30 बजे तक यज्ञ
भजन	:	5:30 से 6:30 तक
उपदेश	:	6:30 से 7 बजे तक
भोजन	:	7 से 8 बजे तक

दिनांक 4 मई, 2019

यज्ञ	:	प्रातः– 7 से 8:30 तक
मुख्यातिथि	:	**श्री हंसराज जी**
		विधानसभा उपाध्यक्ष हिमाचल पप्रदेश सरकार
उपदेश	:	9:30 से 10 बजे तक
पुनः सत्संग	:	11 से 1 बजे तक भजन, उपदेश
भोजन	:	1 से 2 बजे तक
विश्राम	:	2 से 3.30 बजे तक
चाय	:	3.30 से 4 बजे तक
सायंकालीन सत्र	:	4 से 5.30 बजे तक यज्ञ
भजन	:	5.30 से 6.30 बजे तक
उपदेश	:	6.30 से 7 बजे तक
भोजन	:	7 से 8 बजे तक

दिनांक 5 मई, 2019

यज्ञ	:	प्रातः 6.30 से 8:30 तक
पूज्य स्वामी जी की मूर्ति का लोकार्पण	:	प्रातः 9.00 बजे से 9.30 तक **पूज्य स्वामी आर्यवेश जी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा**
भजन	:	9:30 से 10 बजे तक (संदीप आर्य जी द्वारा)
उपदेश	:	10 से 10.30 बजे तक (आचार्य रामानन्द जी द्वारा)
उपदेश	:	11 से 12 बजे तक (स्वामी आर्यवेश जी द्वारा)

धन्यवाद, शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम की समाप्ति 12 से 12.30 बजे तक

प्रिय बन्धुओ– समय तेज गति से बीतता जा रहा है। कार्यक्रम की तिथियां वेग से समीप दर समीप आती जा रही हैं। हर प्रकार से तैयारियां की जानी शेश हैं। अतः हृदय की गहराईयों से उत्पन्न आदर व सम्मान के साथ संप्रेषित हमारे इसी आमन्त्रण को अन्तीम आमन्त्रण पत्र मानकर इस सुरम्य पर्वतीय प्रदेश के सौन्दर्य को निहारने के लिए भगवान वेद के अनुसार– उपह्वरेगिरिणां संगमे च नदीनाम्– के अनुसार गगनचुम्बी पर्वतों की तलहटी में पवित्र रावी नदी के किनारे पर बने आर्यों की तीर्थस्थली, पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी की तपस्थलि में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम का आनन्द उठाने के लिए आएं और शिव की प्रज्वलित इस धूनी (यज्ञ) में आहुतियां समर्पित कर परम सौभाग्य को प्राप्त करें। अतः आना अवश्य आना। सौभाग्यमय अवसर का लाभ उठाने के लिए आना। पुण्यमय कर्मों के संचय के लिए आना। अन्तिम यात्रा में वही पुण्यों का संचय ही तो हमारा साथ निभाएगा, हमारे साथ जाएगा। अग्नौप्राप्तं पुरुषं कर्मान्वेति स्वयं कृतम्– इसलिए जब भी शुभ कर्मों को कमाने का अवसर मिले तो उसे गंवाना नहीं चाहिए। तस्मात् पुरुषो यत्नाद धर्मं संचुनुयाद शनैः– यत्नपूर्वक उन्हें एकत्रित करने का यत्न मनुष्य को करना चाहिए। इन सौभाग्यमय अवसरों को उपस्थित करने का सिलसिला पूज्य चरण जारी कर गए थे। जिनके जन्मदिन को इसी रूप में हम मनाने जा रहे हैं। जिस परम्परा को हम भी जारी रखने का प्रयास कर रहे हैं।

बन्धुओं– आप लोगों के सहयोग, आप लोगों के सहारे के बिना जो सम्भव नहीं है। अतः सहयोग व सहारे की भावना से आना हम प्रतीक्षा में रहेंगें।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन नालापानी देहरादून द्वारा आयोजित ग्रीष्मोत्सव एवं स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून द्वारा ग्रीष्मोत्सव एवं स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह 15 से 19 मई, 2019 तक समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर होने वाले यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती होंगे। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः 5 से 6 बजे तक योग साधना तथा 6.30 से 8.30 बजे तक सन्ध्या एवं यज्ञ होगा इसी प्रकार सायं 3.30 से 6 बजे तक यज्ञ एवं संन्ध्या तथा रात्रि में 7.30 से 9.30 तक भजनों एवं प्रवचनों का कार्यक्रम चलेगा। इस अवसर पर युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन के साथ–साथ 19 मई को स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह का भव्य आयोजन किया गया है। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शनम् – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

लोकनायक जय प्रकाश नारायण आन्दोलन, आतंकवाद विरोधी आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन, अंग्रेजी हटाओ रोजगार दिलाओ आन्दोलन तथा बेटी बचाओ अभियान के अन्तर्गत कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध अभियान आदि को सफलता के शिखर तक पहुँचाने का श्रेय सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् को जाता है। स्वामी आर्यवेश जी ने इस बात पर बल दिया कि परिषद् को पुनः सक्रिय होकर आगामी कार्यक्रम निर्धारित करना होगा तथा देश की वर्तमान परिस्थितियों के दृष्टिगत अनेक ज्वलन्त समस्याओं से जूझती जनता को मुक्ति दिलाने के लिए, अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इस उद्देश्य को केन्द्रित करके आज की बैठक आहुत की गई है।

परिषद् के संस्थापकों में से प्रमुख व्यक्तित्व श्री चन्द्रभान आर्य जी का ओ३म् पट्ट द्वारा स्वागत करते हुए कार्यकर्तागण

बैठक में आगामी मई तथा जून मास में स्कूल, कालेजों की होने वाली ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर के युवा निर्माण शिविरों की योजना तैयार करके हमें युवा पीढ़ी को संगठित करना है और आर्य राष्ट्र निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाने हैं। बैठक का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष योगाचार्य श्री दीक्षेन्द्र आर्य ने किया।

बैठक में परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द, श्री रामनिवास, प्रिं. आजाद सिंह, प्रो. जय प्रकाश आर्य, डॉ. शीशराम आर्य, श्री बाबूलाल आर्य, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या, श्री सत्यवीर आर्य, श्री होशियार सिंह, श्री जयपाल आर्य, श्री गुलाब सिंह आर्य, डॉ. राजपाल आर्य, श्री धर्मवीर सरपंच, श्री सत्यपाल आर्य सरपंच, श्री सूरजमल पहलवान, श्री सज्जन सिंह राठी, मा. अजीत पाल, श्री अशोक आर्य पहलवान, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री बलराम आर्य, श्री अमित आर्य, श्री अजयपाल आर्य, सुश्री रिंकू आर्या, रीमा आर्या, शशि आर्या, इन्दू आर्या, किरण आर्या, राजकुमारी आर्या, मोनिका आर्या, सुषमा आर्या तथा पूजा आर्या आदि ने अपने सुझाव एवं विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर परिषद् के संस्थापकों में विशिष्ट स्थान रखने वाले श्री चन्द्रभान आर्य जो अमेरिका से पधारे हुए थे का जोरदार स्वागत किया गया। सभी सदस्यों ने अंगवस्त्र द्वारा उनका सम्मान किया। स्वामी आर्यवेश जी ने उन्हें आर्य गौरव के सम्मान से प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। श्री चन्द्रभान आर्य परिषद् को तन–मन–धन से अपना सहयोग प्रदान करते हैं। उनकी धर्मपत्नी बहन लक्ष्मी आर्या भी लड़कियों की शिक्षा एवं सशक्तिकरण के लिए विशेष आर्थिक सहयोग प्रदान करती हैं। परिषद् की ओर से इन दोनों की विशेष प्रशस्ति करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

बैठक में निश्चय हुआ कि ग्रीष्म कालीन छुट्टियों में युवक एवं युवतियों के अनेक शिविरों का आयोजन किया जायेगा जिनमें प्रमुख रूप से सिहोर (मध्य प्रदेश), (युवक एवं युवतियों के शिविर), कन्या शिविर जयपुर, युवा निर्माण शिविर पलवल, युवा निर्माण शिविर कैथल एवं पाई, सेरदा, छोथ युवा निर्माण शिविर, सोनीपत, गंगाना, विश्वामील, युवा निर्माण शिविर जूई, भिवानी, बहल, चहडकलां, युवा निर्माण शिविर जीन्द, चाँदपुर, खटकड़, छातर, गोईंयाँ, युवा निर्माण शिविर एवं कन्या शिविर फरमाणा, बलम्बा, टिटौली, युवा निर्माण शिवर फुगाना, शुक्रताल, छपरौली, युवा निर्माण शिविर ज्वालापुर महाविद्यालय हरिद्वार, युवा निर्माण शिविर चम्बा, हिमाचल प्रदेश, युवा निर्माण शिविर घटाग्रां परभणी महाराष्ट्र, युवा निर्माण शिविर व्यापुर बिहार आदि के नाम उल्लेखनीय है।

1 जून, 2019 से 5 जून, 2019 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में राष्ट्रीय युवा निर्माण शिविर तथा 6 से 12 जून, 2019 तक राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का आयोजन किया जायेगा।

सर्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की महत्त्वपूर्ण बैठक में अतिथियों का सम्मान करते हुए स्वामी आर्यवेश जी

परमात्मा का दर्शन किसी देवी देवता के रूप में नहीं होता

– श्री हरिशचन्द्र वर्मा 'वैदिक'

जो परमात्मा को देखना और समझना चाहते हैं, उन्हें सर्वप्रथम यम और नियमों का पालन करना चाहिए। योगाभ्यासी भी पहले इन्हीं नियमों को अपनाते हैं। योगशास्त्र में पाँच यम और पाँच नियम इस प्रकार हैं–

तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।

शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः।।

अहिंसा– मन, वाणी और क्रिया से किसी भी प्राणी को तकलीफ न देना।

सत्य– मन, वचन और क्रिया तीनों में सत्य के प्रतिष्ठित होने से योगदर्शन भाश्यकार व्यास के लेखानुसार योगी की वाणी अमोघ हो जाती है।

अस्तेय– मन, वाणी और क्रिया से किसी की भी चोरी न करना। बिना आज्ञा के किसी की भी कोई वस्तु न लेना, वह भले ही लेते हुए देख रहा हो, चोरी है। लोभी, रिश्वतखोर और मिलावट करने वाले ये सभी चोर हैं।

ब्रह्मचर्य– शरीर में उत्पन्न हुए रज–वीर्य की रक्षा करते हुए लोकोपकारक विद्याओं का अध्ययन करना। बड़े–बड़े ज्ञानी गुणी को कामवासना अन्धा बना देती है उससे दूर रहना है।

अपरिग्रह– न्यायपूर्वक भोग करना, अन्यायपूर्वक धन का संग्रह करना दुःखकारक होता है।

नियम– अपने कर्म के फल से दुःखी न होना पड़े इसलिए योगी को नियमों का पालन करना चाहिए। वे नियम ये हैं–

शौच– बाह्य और अन्तःकरणों को शुद्ध रखना।

सन्तोष– पुरुषार्थ से जो कुछ प्राप्त हो, उससे अधिक की इच्छा न करना और अन्यों के धनादि को अपने लिए लोष्ठवत समझना।

तप– शीतोष्ण, सुख–दुःखादि को एक जैसा समझते हुए नियमित और संयमित जीवन व्यतीत करना।

स्वाध्याय– ओंकार का श्रद्धापूर्वक जप करना और वेद–उपनिषदादि उद्देष्य साधक ग्रन्थों का निरन्तर अध्ययन करना।

ईश्वरप्रणिधान– ईश्वर का प्रेम हृदय में रखते हुए और उसको अत्यन्त प्रिय परमगुरु समझते हुए अपने समस्त कर्मों को उसके अर्पण करना।

उसके पश्चात् प्रातःकाल जिस आसन में देर तक बैठा जा सके उसी आसन अथवा पद्मासन या स्वस्तिकासन में बैठकर (70 या 80 वर्ष वाले) पहले दीर्घ स्वासन करें, कम से कम 10 दस बार (लम्बा श्वांस लें और छोड़ें) उसके पश्चात् लोहार की धौकनी की तरह कपालभांति कम से कम 25 या 50 बार करें, उसके पश्चात् नाड़ीशोधन– अनुलोम विलोम प्राणायाम 15 या 25 बार करें, उसके बाद रेचक, पूरक और कुम्भक प्राणायाम में पहले रेचक प्राणायाम को सिद्ध करें अर्थात् वायु को वेग से बाहर निकाल कर रोक दें, जब श्वांस लेना चाहें तो अन्दर लेकर पुनरपि वैसे ही करें और प्राणायाम (ओम् भूः, ओम भुवः, ओम् स्वः, ओम् महः, ओम् जनः, ओम् तपः, ओम् सत्यम्) मंत्रों के जप सहित करते रहें। यह क्रिया कम से कम 5 से 7 बार करें। इसके सिद्ध हो जाने से अन्य सभी प्राणायाम साध्य हो जाते हैं। जप और प्राणायाम की प्रत्येक क्रिया के साथ 'ओ३म्' का मानसिक जप किया जाता है। जितना ही अधिक जप किया जाता है उतनी ही अधिक कुम्भक की मात्रा बढ़ती जाती है। इस प्रकार प्राणायाम से जप और जप से प्राणायाम की उपयोगिता बढ़ती है। ओंकार का जप ही सर्वश्रेष्ठ जप है, इसीलिए योगाचार्य पतंजलि और इसीलिए वेद ने भी ओ३म् क्रतो स्मर (हे जीव! ओ३म् का स्मरण एवं जप कर) के द्वारा 'ओ३म्' का ही जप बताया है।

जब योगाभ्यासी प्राणायाम के पश्चात् शरीर के सात चक्र में से किसी एक, हृदय या भृकुटी में 'ओम्' प्रणव का एक मन से श्रद्धापूर्वक जप करने लगता है तब प्रयत्न करते रहने से मन चंचलता रहित होकर जहाँ ध्यान लगा रहता है वहाँ मन की सारी वृत्तियाँ उसके साथ एक हो जाती हैं। इस प्रकार जब ध्यान में मन स्थिर होने लगता है तब प्राण का भी स्तम्भन होने लगता है और जब दोनों शक्तियाँ आपस में मिलती हैं तब ऐश्वरी प्रकाश का उस एकाग्रता में अन्तर्चक्षु द्वारा दर्शन होने लगता है। उस रंगारंग प्रकाश को देखकर साधक को जो उस अवस्था में आनन्द प्राप्त होता है, वह भौतिक आनन्द से पृथक् होता है।

विशोका वा ज्योतिष्मती।

– योगदर्षन 1/36

अर्थ– शोक से रहित और प्रकाश युक्त प्रवृत्ति उत्पन्न होकर मन की स्थिति को बाँधने वाली होती है।

व्याख्या– हृदय कमल या भृकुटि में जब प्राण धारण किया जाता है तब योगी की प्रकाश युक्त और प्रकाश के समान विस्तृत (संकोचरहित हो जाती है) उस (बुद्धि) में स्थिर होने से सूर्य, चन्द्र और मणियों के प्रकाश के समान जाज्वल्यमान ज्ञान प्राप्त होता है। इस अवस्था में उसकी दशा तरंग रहित महासागर के समान शान्त और निश्चल होती है और वह प्रभु प्रेम में मग्न रहने लगता है। इस प्रवृत्ति को प्रकाशयुक्ता ज्योतिष्मती प्रवृत्ति कहते हैं। ध्यानी उस अवस्था में उस प्रकाश में जितना ही आगे बढ़ता है उतना ही उसमें तीव्रता होने लगती है। हमारे आचार्य जी का कहना था कि जो ध्यान में प्रकाश का उद्भव होता है वह ईश्वरीय सृष्टि तत्वों के प्रकाश हैं जो साधक अपनी साधना द्वारा ध्यान की एकाग्रता के हो जाने से उसे दिखने लगता है।

ध्यान में अपनी तरफ से बनावटी किसी प्रकार की कोई कल्पना नहीं की जाती। अतः किसी देवी देवता की आकृति की कल्पना नहीं करनी चाहिए और न किसी बाह्य ध्वनि की तरफ ध्यान दिया जाता है। केवल उस प्रणव प्राणाधार का ही चिन्तन और जप करना है, क्योंकि वही हम सबका जीवनदाता सर्वदुःखनाशक और सुख का देने वाला है।

ध्यान में अपनी तरफ से बनावटी किसी प्रकार की कोई कल्पना नहीं की जाती। अतः किसी देवी देवता की आकृति की कल्पना नहीं करनी चाहिए और न किसी बाह्य ध्वनि की तरफ ध्यान दिया जाता है। केवल उस प्रणव प्राणाधार का ही चिन्तन और जप करना है, क्योंकि वही हम सबका जीवनदाता सर्वदुःखनाशक और सुख का देने वाला है।

पतंजलि शास्त्र के अनुसार योग के आठ अंग होते हैं यथा–

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयो ऽष्टावंगानि।

– योगदर्शन 2/29

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार–धारणा ध्यान और समाधि। इनमें से यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार ये योग के वहिरंग साधन हैं और धारणा, ध्यान अन्तरंग साधन हैं।

ध्यान– तत्र प्रत्यैकतानता ध्यानम् ।

– योगदर्शन 3/2

अर्थ –उस धारणा में प्रत्यय ज्ञान का एकसा बना रहना ध्यान कहा जाता है।

व्याख्या– देश विशेष नाभि चक्रादि में चित्त का ठहराना धारणा कहा जाता है। यह चित्त का ठहराव जब स्थित हो जावे और ध्येय का ज्ञान एक जैसा बना रहे और दूसरा किसी प्रकार का ज्ञान चित्त में न आवे तो इस अवस्था का नाम ध्यान कहा जाता है।

समाधि– तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः।

– योगदर्शन 3/3

अर्थ– उसी ध्यान में जब अर्थ ध्येय मात्र का प्रकाश रह जावे और ध्याता अपने रूप से शून्य सा हो जावे उसे समाधि कहेंगे।

व्याख्या– ध्यान और समाधि में अन्तर यह है कि ध्यान में ध्याता, ध्यान और ध्येय इन तीनों का ज्ञान योगी को रहता है परन्तु समाधि में अर्थ ध्येय मात्र का प्रकाश रह जाता है। ध्याता और ध्यान न रहते हों यह नहीं है, ये जरूर हैं परन्तु इनका स्वरूप शून्य–सा हो जाता है। ध्यान का ध्येय के स्वभाव का पूर्ण आवेश हो जाता है। इस आवेश का फल यह होता है कि ध्याता को अपनी सुध–बुध नहीं रहती और वह केवल ध्येय के प्रकाश में ही निमग्न और तल्लीन सा हो जाता है।

इसका भी साक्षात् अभ्यास प्राणायाम और जप के सिवा और कुछ नहीं है। एक घण्टा या उससे अधिक जब योगी बिना श्वांस लिए रहने लगता है तब समाधि अवस्था का प्रारम्भ हो जाता है। यही समाधि घण्टों ही नहीं रहती बल्कि दिनों और सप्ताहों तक पहुँचती है। महात्मा नारायण स्वामी योग रहस्य में लिखते हैं कि इसका अधिक वर्णन करना व्यर्थ है। उपनिशद् के शब्दों में इतना ही कह देना काफी है।

समाधिनिर्धूतमलस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनि यत्सुखं भवेत्।

न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयन्तदन्तःकरणेन गृह्यते।।

– मैत्रायणी उपनिषद 4/4/9

अर्थात् मलों के नष्ट होने पर समाधिस्थ होकर आत्मरत होने से जो आनन्द प्राप्त होता है उस परमात्मा के दर्शन को वाणी से नहीं कहा जा सकता, वह तो स्वयं अन्तःकरण से ग्रहण किया जाता है।

साधक ध्यानावस्था में यदि 'ओ३म्' ध्वनि को सुनना चाहे तो उसे वह गरगराता हुआ सुनाई देने लगता है। इससे भी मन में एकाग्रता बढ़ जाती है और आनन्द का अनुभव होने लगता है, परन्तु जहाँ मन विचलित हुआ कि वहाँ सूक्ष्म जगत् की क्रिया बन्द हो जाती है और योगाभ्यासी माया में आ जाता है। ध्यान की एकाग्रता से जब प्रकाश का उदय होने लगता है उसके लिए पूज्य आचार्य पंडित वीरसेन वेदश्रमी जी का कहना था कि भृकुटियाँ हृदय में प्रकाश को स्थिर कीजिए। उसमें 'ओ३म्' का जप कीजिए। प्रकाश उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होना चाहिए। अभ्यास पुनः प्रकाश के साथ 'ओ३म्' का नाद स्वतः सुनने का प्रयत्न करें। प्रकाश और नाद का यदि सतत् प्रवाह चलेगा तो आप आनन्द में अन्तर में लीन रहेंगे। श्वांस अपने आप रुका रहेगा तब श्वांस ध्यान मात्र से ही रुकेगा, ध्यान हटते ही चलने लगेगा। उस समय आपको जप करने की आवश्यकता नहीं। जिस प्रकार मधु मुँह में भरकर कोई बोलता नहीं उसके स्वाद लेने में मस्त रहता है और मुँह खोलने से मधु गिरने का भय रहता है, उसी प्रकार अन्तर की ध्वनि अनहद नाद को सुनने में चित्त लगेगा और जप की फुर्सत नहीं होगी अर्थात् 'ओ३म्' स्वतः उद्भव होगा।

मैंने आचार्य जी से पूछा था कि जब समाधि में योगाभ्यासी का श्वांस प्रश्वांस बन्द होने लगता है यहाँ तक कि हृदय की गति भी मन्द अथवा बन्द हो जाती है तब उस समय उसका आत्मा कहाँ रहता है। उसका उत्तर था कि श्वांस प्रश्वांस की गति रुकने की अवस्था में जब देर तक होगी तो हृदय की गति भी बन्द होगी। रक्त का परिभ्रमण भी बन्द रहेगा, प्राणशक्ति जीवात्मा के साथ हृदय में जहाँ चित्त ठहरा हुआ है या भृकुटी या सहस्रार चक्र में स्थित रहकर शरीर को जीवित तेजयुक्त रखती है। उसमें मृतवत् दुर्गन्ध विकृति नहीं होती।

अनेक साधक कहते हैं कि उस समाधि अवस्था में प्राण, सुषुम्ना नाड़ी में प्रवेश कर जाता है। तात्पर्य यह कि आत्मा जब तक किसी भी कोश में स्थित होकर इस शरीर में रहेगा तब तक मृत सदृश समझा जाने वाला शरीर प्रयत्न करने पर पुनः मन प्राण आदि को प्राप्त कर सकता है। इसका प्रमाण यजुर्वेद में है–

पुनर्मनः पुनरायुर्मऽआगन्पुनः प्राणः पुनरात्मामऽआगन्पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रंमऽआगन्।

– यजु 4/15

अर्थात् मुझे पुनः मन, आयु, प्राण, आत्मा, चक्षु और श्रोत्रादि प्राप्त हों। यह कार्य वैश्वानर अग्नि के कारण तथा शरीर की स्थति ठीक होने पर ही होगा। यौगिक आसन एवं प्राणायाम आसपास के शान्त वातावरण, प्रातः चार या पाँच बजे से करना चाहिए। प्राणायामों के समाप्त होने पर पाँच बार भ्रामरी अवश्य करें। जिनको हाइब्लडप्रेशर एवं गैस की बीमारी तथा उदर ठीक नहीं रहता उन्हें प्राणायाम अधिक देर तक नहीं करना चाहिए।

पाँच सूक्ष्मभूत एवं आत्मा के सम्बन्ध से सूक्ष्म शरीर बना है। अन्तरिक्ष (सूर्य) अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी इन्हीं तत्वों को प्राप्त कर (सूक्ष्म शरीर द्वारा) आत्मा, शरीरधारी प्राणियों के उत्पन्न का कार्य कारण बना है। सूक्ष्म शरीर का गठन– पाँच प्राण (से पाँच कर्मेन्द्रिय) पाँच सूक्ष्म भूत (से) पाँच ज्ञानेन्द्रिय (और आत्मा से) मन तथा बुद्धि इन सतरह तत्त्वों के समुदाय से हुआ है।

– मुकाम पोस्ट– मुरई, जिला– वीरभूम
पश्चिम बंगाल– 731219

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें। **-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक**

धीमा ज़हर है – कोल्डड्रिंक

अधिक मात्रा में कोल्डड्रिंक पीने से मृत्यु भी हो सकती है

कोलाब्राण्ड के कोल्डड्रिंक में कैफीन डाला जाता है जो अधिक मात्रा में लेने पर बेचैनी, अनिद्रा व सिरदर्द पैदा करता है। ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अमरीका व यूरोप में 88ppm से कम कैफीन डालती है जबकि भारत में 111ppm तक कैफीन उपयोग करती है। जाँच करने पर कोल्डड्रिक में कई अन्य जहरीले रसायन भी पाये गये, जैसे- आर्सेनिक, कैडमियम, जिंक, सोडियम ग्लूटामेट, पोटैशियम सोरबेट, मिथाइल बेंजीन, ब्रोमिनेटेड बेजिटेबल ऑयल इत्यादि। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने कोल्डड्रिंक को 'धीमा ज़हर' घोषित किया है।

किसी भी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् अग्निदाह में देशी घी डाला जाता है जिससे पूरा शरीर जल जाता है व हड्डियाँ भी जल जाती हैं परन्तु दाँत बिल्कुल नहीं जलते। इसी तरह, यदि दाँत को मिट्टी में गाड़ दें व 20 साल के बाद निकालें तो भी दाँत बिल्कुल नहीं गलते हैं।

जिस दाँत को घी की आग नहीं जला सकती, मिट्टी नहीं गला सकती है यदि उस दाँत को किसी भी कोल्डड्रिंक में डाला जाये तो ज्यादा से ज्यादा 20 दिन में वह दाँत पूरा घुल जाता है तथा छानने पर भी दिखाई नहीं देता।

कारण-कोल्डड्रिंक में फास्फोरिक एसिड (तेजाब) नामक जहर होता है, जो मनुष्य के शरीर के सबसे कठोर अंग यानि दाँत को ही नहीं बल्कि दुनियाँ की अधिकतर वस्तुओं, यहाँ तक कि लोहे को भी पूरी तरह से खा जाता है। अब आप सोचिए कि कोल्डड्रिंक पीने पर यह शरीर के कई नाजुक अंगों के सम्पर्क में आता है तो उनका क्या हाल होता होगा। चूँकि कोल्डड्रिंक में बहुत पानी होता है इसलिए इसका असर धीमे-धीमे होता है व तत्काल दिखाई नहीं देता है।

अहमदाबाद स्थित कंज्यूमर एजूकेशन एण्ड रिसर्च सेंटर द्वारा जाँच करने पर कोल्डड्रिंक में कार्बोलिक एसिड एरिथारबिक एसिड व बेंजोइक एसिड नामक तेजाब भी पाये गये हैं। रसायन विज्ञान का कोई भी विद्यार्थी जानता है कि किसी भी एसिड की तीव्रता PH पेपर से पता की जा सकती है PH7 जितनी कम होगी, एसिड उतना तीव्र होगा। कोल्डड्रिंक की PH तीव्रता लगभग 2.4 होती है। इसी कारण कोल्डड्रिंक पीने पर गले व पेट में जलन, डकारें, दिमाग में सनसनी, चिड़चिड़ापन तथा एसिडिटी हो जाती है। ध्यान रहे कि कई फलों व सब्जियों जैसे नारंगी, नींबू, कैरी में भी एसिड होते हैं लेकिन प्राकृतिक रूप में होने से शरीर में जाकर वे क्षार में बदल जाते हैं तथा शरीर की एसिडिटी कम करने का कार्य करते हैं जबकि कोल्डड्रिंक में एसिड कृत्रिम रूप में होने के कारण खतरनाक होते हैं।

घर में संडास साफ करने में इस्तेमाल होने वाले हाइड्रोक्लोरिक एसिड की PH तीव्रता कोल्डड्रिंक के बराबर है। क्या ऐसे कोल्डड्रिंक को पीना चाहिए या .....?जरा सोचिए!!!

शरीर विज्ञान के अनुसार हर प्राणी सांस के माध्यम से हवा में विद्यमान ऑक्सीजन (प्राण वायु) लेता है तथा शरीर में उत्पन्न कार्बन डाई ऑक्साईड (Co_2) नामक जहरीली गैस बाहर निकाल देता है। हर कोल्डड्रिंक में Co_2 डाली जाती है जिससे यह लम्बे समय तक खराब न हो। कोल्डड्रिंक पीने पर शरीर इसे नाक व मुँह के माध्यम से वापस बाहर निकाल देता है। यदि कभी गलती से बाहर न निकल पाये तो मृत्यु निश्चित है।

हाल ही में सरकार ने कानून बनाया है कि गाड़ियों में सिर्फ सीसा रहित (अनलीडेड) पेट्रोल ही उपयोग किया जाए क्योंकि सीसा इंजन में जलता नहीं है व धुएँ के साथ बाहर

निकलकर हवा को प्रदूषित करता है। हवा में सीसे की मात्रा 0.2ppm से अधिक होने पर लोगों द्वारा इसमें सांस लेने पर यह स्नायुतंत्र, मस्तिष्क, गुर्दो, लीवर व मांसपेशियों के लिए घातक होता है।

कोकाकोला व पेप्सीकोला दोनों अमरीका की कम्पनियाँ हैं तथा वहाँ अधिक जागरूकता के कारण बेचे जाने वाले कोल्डड्रिंक में 0.2ppm से कम सीसा डाला जाता है जबकि इन्हीं बेईमान कम्पनियों द्वारा भारत में ''सब चलता है'' की तर्ज पर कोल्डड्रिंक में 0.4ppm सीसा डाला जाता है।

कोलाब्राण्ड के कोल्डड्रिंक में कैफीन डाला जाता है जो अधिक मात्रा में लेने पर बेचैनी, अनिद्रा व सिरदर्द पैदा करता है। ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अमरीका व यूरोप में 88ppm से कम कैफीन डालती है जबकि भारत में 111ppm तक कैफीन उपयोग करती है। जाँच करने पर कोल्डड्रिक में कई अन्य जहरीले रसायन भी पाये गये, जैसे- आर्सेनिक, कैडमियम, जिंक, सोडियम ग्लूटामेट, पोटैशियम सोरबेट, मिथाइल बेंजीन, ब्रोमिनेटेड बेजिटेबल ऑयल इत्यादि। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने कोल्डड्रिंक को 'धीमा ज़हर' घोषित किया है।

गौरतलब है कि एस्परटेम से बच्चों में ब्रेनहेम्रेज (मस्तिष्कघात) होकर उनकी मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए बोतल/केन पर चेतावनी लिखी है कि बच्चे इस्तेमाल न करें।

डॉक्टर्स के अनुसार कोल्डड्रिंक में पौष्टिक तत्व बिल्कुल नहीं है। यानि इसमें शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन, विटामिन, वसा, खनिज, कैल्शियम व फास्फोरस में से कुछ भी नहीं है। वहीं दूसरी ओर दूध औषधीय गुणधर्म वाला पौष्टिक, सुपाच्य व सम्पूर्ण आहार है तथा सिर्फ इसको पिलाने से बच्चे के शरीर का पूर्ण विकास होता है।

कीमत - कोल्डड्रिंक - 10/- रुपये 300 मिली. बोतल 33/- रुपये लीटर (फैक्ट्री लागत 70 पैसे/बोतल) .... दूध - अधिकतम 38/- रुपये प्रति लीटर।

बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हजारों वर्षों से दूध की नदियों की संस्कृति वाले हमारे देश में पिछले 10 वर्षों में आम मानसिकता इतनी विकृत हुई है कि आधुनिकता व स्टेट्स के भ्रम में लोग दूध से दोगुना से ज्यादा मंहगा तथा कई जहरीले रसायनों वाला कोल्डड्रिंक जीवन जल समझकर गटागट पी ही नहीं रहें हैं बल्कि देवता स्वरूप अतिथि को पिला भी रहे हैं।

एक 300 मिली. कोल्डड्रिंक की बोतल धोने में लगभग 10 लीटर पानी खर्च होता है। जिस देश में आजादी के इतने वर्षों के बाद भी 2 लाख गाँवों यानि 33 करोड़ जनसंख्या यानि हर तीन में से एक व्यक्ति को पीने के लिए पानी भी नसीब नहीं होता है, उस देश में कोल्डड्रिंक पीने से बड़ा कोई और पाप नहीं है। जरा सोचिए!!!

ये दोनों कम्पनियाँ सांठगांठ करके सारी कोल्डड्रिंक की एक ही कीमत रखती है। कोल्डड्रिंक में 1000 प्रतिशत से ज्यादा मुनाफा होने के कारण बिक्री बढ़ाने के लिए ये कम्पनियाँ करोड़ों रुपये खर्च करके फिल्मी सितारों व खिलाड़ियों के विज्ञापन सभी टी. वी. चैनलों, अखबारों व पत्रिकाओं में बार-बार देती है। इनसे बड़ा खेलों व फिल्मों का प्रायोजक पूरी दुनियाँ में कोई नहीं है। ये नये-नये व लुभावने व सेक्सी विज्ञापनों द्वारा लोगों के मस्तिष्क को पंगु बनाकर पश्चिमी जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है तथा मन में कामेच्छा जगाती है।

दुर्भाग्य इस देश का कि कंगाली का रोना रोने वाली सरकार ने जहाँ एक ओर गरीबों को मिलने वाले राशन के अनाज की कीमत डेढ़ गुनी कर दी है वहीं दूसरी ओर इस जहरीले पानी पर एक्साइज ड्यूटी 8 प्रतिशत घटा दी है।

अतः बहिष्कार करें - पेप्सी, लहर, 7अप, मिरिण्डा, रश, कोक, स्प्राईट, थम्सअप, लिम्का, गोल्डस्प्राइट का।

और सेवन करें - ताजे फलों का रस, मिल्क शेक, नारियल पानी, कैरी पानी, नींबू की शिकन्जी, दूध, दही, लस्सी, जलजीरा, ठंडाई, चंदन, रुहआफज़ा, रसना, डाबर फ्रूटी, पारले फ्रूटी गोदरेज जम्पिन आदि का सेवन करें।

- श्री मनोहर लाल छावड़ा के सौजन्य से
(सुमंगलम् संस्था द्वारा जनहित में प्रकाशित)

सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि कृत सर्वशुद्ध द्वितीय संस्करण द्वारा मुद्रित है अर्थात् 37वां संस्करण के अनुसार प्रकाशित है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश सर्वशुद्ध, द्वितीय संस्करण के अनुसार 20x30 के 8वें के बड़े साईज में कम्प्युटर द्वारा मुद्रित होकर तैयार है। पृष्ठ संख्या 432 रेक्सिन वाली जिल्द, लेमिनेशन वाला आकर्षक टाईटिल है।

प्रत्येक अक्षर मोतियों जैसा पठनीय है। कागज भी मजबूत और ग्लेज है।

मूल्य – अजिल्द – 160/– रुपये, सजिल्द – 225/– रुपये, डाक से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें :–

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या–0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

मधुर प्रकाशन
2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–110006
मो.:–9810431857

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'
लेखक–स्वामी सत्यानन्द,
मूल्य 150 रुपये, पृष्ठ–455

'मनुस्मृति'
भाष्यकार पं. तुलसीराम स्वामी,
मूल्य 200 रुपये, पृष्ठ–595

उपरोक्त दोनों पुस्तकें बढ़िया कागज व प्रिंटिंग के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–2 पर 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध हैं। डाक से मंगाने पर एक प्रति के हिसाब से 25 रुपये डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 4100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

4100/– रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।